Chapter 11

आदिकालीन साहित्य

Kesharam Chouhan, Department of Hindi
Shri Jain Terapanthi College, Ranawas, Pali

रासो साहित्य –

रासो साहित्य की व्युत्पत्ति

गार्सा द तासी –

'राजसू' या राजसूय शब्द से मानी जाती है।

आचार्य रामचंद्र शुक्ल– 'रसायण'।

आचार्य हजारी द्विवेदी – रासक –रासअ – रासा– रासो।

डॉ.दशरथ शर्मा – रास।

श्री विंध्येश्वरी पाठक तथा पंडित हर प्रसाद शास्त्री – 'राजयश'।

श्यामल दास डॉ० काशी प्रसाद जायसवाल – रहस्य।

रासो साहित्य की प्रमुख रचनाएं –

1 पृथ्वीराज रासो – चंद्रबरदाई

69 समय सर्गों में विभाजन प्रकाशन– 1585 ई .

आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने पृथ्वीराज रासो को हिंदी साहित्य का प्रथम महाकाव्य माना है।

पृथ्वीराज रासो महाकाव्य 16306 पद (श्लोक)

68 प्रकार के छंदों में से छप्पय छंद के साथ सर्वाधिक प्रयोग दोहा तोमर गाहा एवं आर्या छंदों का प्रयोग

नायक व श्रेणी पृथ्वीराज चौहान (धीरोदात्त नायक) अजमेर के चौहान राजा अर्णोराज के पौत्र एवं सोमेश्वर के पुत्र ।

नायिका श्रेणी – संयोगिता (मुग्धा नायिका) कन्नौज के राजा जयचंद की पुत्री।

इस ग्रंथ का उत्तरार्द्ध भाग चंदबरदाई के पुत्र जल्हण द्वारा पूर्ण किया गया था – आचार्य रामचंद्र शुक्ल डॉ० नगेंद्र ,श्री हर प्रसाद शास्त्री।

''पुस्तक जल्हण हत्थ दै चलि गज्जन नृप काज।''

पृथ्वीराज रासो की प्रामाणिकता पर मत –

अप्रमाणिक मानने वाले इतिहासकार –

१ आचार्य रामचंद्र शुक्ल – यह ग्रंथ पूरा जाली है ।

२ डॉ० वूलर

३ मुंशी देवी प्रसाद

४ कविराज मुरारी दान एवं श्यामलदान

५ राय बहादुर पंडित गौरी शंकर हीरानंद ओझा

६ मोतीलाल मेनारिया

नोट– डॉ० वूलर पृथ्वीराज रासो को अप्रमाणिक मानने वाले प्रथम विद्वान माने जाते हैं इन्हें 1875 में अप्रमाणिक घोषित किया।

अर्द्धप्रमाणिक मानने वाले इतिहासकार –

१ हजारी प्रसाद द्विवेदी

२ सुनीति कुमार चटर्जी

३ मुनि जिन विजय

४ अगर चंद नाहटा

3 प्रमाणिक मानने वाले इतिहासकार –

जॉर्ज ग्रियर्सन, कर्नल टॉड, मिश्रबंधु ,डॉ० श्यामसुंदरदास ,डॉ० नगेंद्र ,डॉ० दशरथ शर्मा, मोहनलाल विष्णु लाल पांड्या, अयोध्या सिंह उपाध्याय, मथुरा प्रसाद दीक्षित ।

बीसलदेव रासो – नरपति नाल्ह

रचनाकाल 1155 ई (1212 विक्रम संवत)

नायक बीसलदेव तृतीय (विग्रहराज चतुर्थ) अजमेर का चौहान राजा

नायिका राजमती – मालवा के भोज परमार की पुत्री।

पिंगल शैली की रचना हिंदी में बारहमासा का सर्वप्रथम वर्णन बीसलदेव रासो में मिलता है

खुमाण रासो – दलपत विजय

वीर रस की प्रधानता।

ISBN: 978-93-344-1269-7

प्रमाणिक हस्तलिखित प्रति – पुणे संग्रहालय में सुरक्षित है।

भाषा – राजस्थानी

इसमें बगदाद के खलीफा अल मामू एवं चित्तौड़ के रावल खुमान के मध्य हुए युद्ध का वर्णन किया गया है।

परमाल रासो – जगनिक

रचनाकाल 1230 विक्रम संवत

यू.पी. में एवं उत्तराखण्ड में इस कवि को आल्हा या आल्हाखंड कहा जाता है। वर्षा ऋतु आषाढ़ व श्रावण मास में इस रचना के गीत गाए जाते हैं।

मुख्य केंद्र है – बैसवाड़ा, महोबा , बुंदेलखंड माने जाते हैं ।

बारह बरस ले कूकर जिऐं , औ तेरह लै जिऐं सियार।
बरिस अठारह छत्री जीऐं, आगे जीवन को धिक्कार।।

1865 ईस्वी में चार्ल्स एलियट के द्वारा आल्हाखंड नाम से प्रथम प्रकाशन।

चंदेलवंशी राजा परमर्दिदेव का दरबारी भाट कवि – जगनिक ने महोबा के दो देश प्रसिद्ध वीर – आल्हा एवं ऊदल के वीर चरित वर्णन वीरगाथात्मक रूप में किया गया है

हम्मीर रासो – शारंगधर रचना काल 1357 ई. (1414) विक्रम संवत। प्राकृत पैंगलम में इस काव्य के कुछ छंद मिले थे उन्हीं के आधार पर आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने हम्मीर रासो के अस्तित्व की कल्पना की थी।

प्राकृत पैंगलम– संकलनकर्ता – लक्ष्मीधर प्राकृत पैंगलम में विद्याधर, शारंगधर , बब्बर एवं जज्जल इन चार कवियों की रचनाओं का संकलन है।

विजयपाल रासो – नल्लसिंह भाट

16वीं शताब्दी ।

विजयगढ़ करौली राज्य के राजा विजयपाल और पंग राजा के युद्ध का वर्णन है। यह अपभ्रंश में रचित है।

रासो साहित्य की प्रवृत्तियाँ –

1. वीर एवं क्षृंगार रस– युध्द कालीन वर्णन में राजा की वीरता एवं पराक्रम का वर्णन प्रमुखता से वर्णित है।
2. विरह का मार्मिक वर्णन – बीसलदेव रासो, पृथ्वीराज रासो, में विरह वर्णन दर्शनीय है।
3. अतिशयोक्ति पूर्ण वर्णनों की अधिकता– आश्रयदाता के युध्द का वर्णन, राजा का पराक्रम, दानवीरता, यशोगाथा आदि का वर्णन उपलब्ध होता है।
4. राष्ट्रीयता का अभाव – इन सभी रचनाओं में राष्ट्रभक्ति की भावना न रहकर रियासती या राजा के राज्य तक ही नीजत्व से देशभक्ति है वरन केन्द्रीय भाव से राष्ट्रभक्ति का अभाव है।
5. अर्द्धप्रमाणिकता एवं संदिग्धता – रचनाओं को कहीं न कहीं तिथि, सम्वत से अर्द्धप्रमाणिकता एवं संदिग्ध ठहराया गया था।

   हम्मीर रासो, जयचंद प्रकाश, जयमयंक जसचंद्रिका जैसी रचनाओं को आलोचकों ने मात्र सूचना ही माना।
6. नख शिख वर्णन– युध्द प्रेरणा से लेकर विलासिता का कारण होते हुए भी आदिकालीन साहित्य में नखशिख वर्णन बेमिसाल है।
7. शिल्पकला – काव्य प्रबंध तथा मुक्तक दोनो ही रूप में रचित हुआ था।
8. छंद विधान – छंद प्रयोग की अधिकता चंदबरदाई रचित रासो में वर्णित है , चंदबरदाई को 'छप्पय छंद' का राजा कहा गया है।
9. भाषा– डिंगल व पिंगल – अधिकांश रचनाएँ इन दोनों भाषा रूपों में रचित है।

ISBN: 978-93-344-1269-7